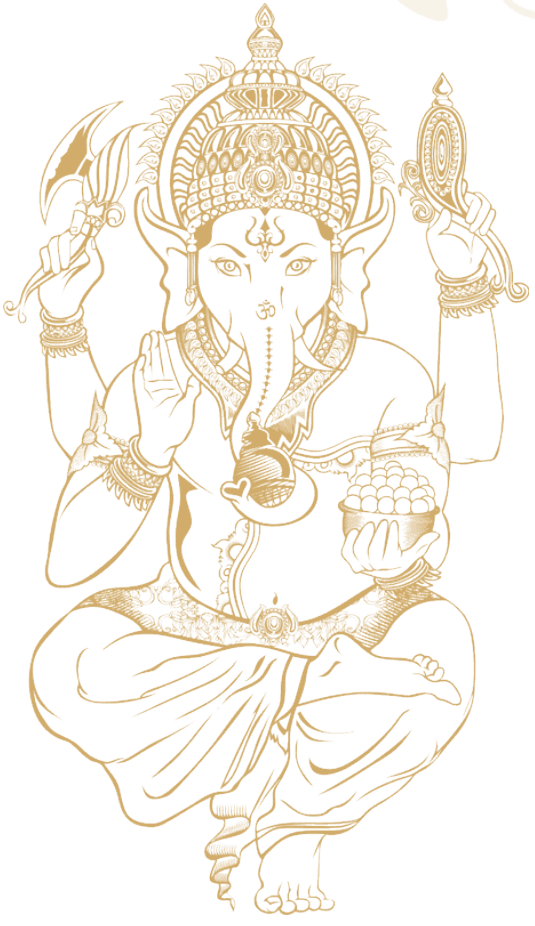

Utkarsh vaishnav

Sakkshi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121034005

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
19/06/2001	जन्म तिथि	4-05/11/2000
मंगलवार	दिन	शनि-रविवार
घंटे 08:05:00	जन्म समय	05:45:00 घंटे
घटी 05:57:16	जन्म समय(घटी)	57:59:58 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Dhar
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:32:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	75:24:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:28:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:42:05	सूर्योदय	06:34:48
19:13:06	सूर्यास्त	17:49:07
23:52:22	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:50

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 3मा 23दि	04:58:49	कर्क	लग्न	तुला	06:59:29	मंगल 5वर्ष 3मा 4दि
राहु	04:01:01	मिथु	सूर्य	तुला	19:01:25	गुरु
12/10/2021	02:37:57	वृष	चंद्र	मक	26:38:43	09/02/2024
13/10/2039	27:08:43	वृश्चि व	मंगल	कन्या	06:42:27	09/02/2040
राहु 24/06/2024	00:10:23	मिथु व	बुध व	तुला	06:59:46	गुरु 29/03/2026
गुरु 18/11/2026	00:41:53	मिथु	गुरु व	वृष	15:13:59	शनि 09/10/2028
शनि 24/09/2029	18:37:30	मेष	शुक्र	वृश्चि	26:24:39	बुध 15/01/2031
बुध 12/04/2032	13:37:47	वृष	शनि व	वृष	04:47:13	केतु 22/12/2031
केतु 01/05/2033	12:30:04	मिथु व	राहु व	मिथु	24:01:35	शुक्र 22/08/2034
शुक्र 30/04/2036	12:30:04	धनु व	केतु व	धनु	24:01:35	सूर्य 10/06/2035
सूर्य 25/03/2037	00:47:56	कुंभ व	हर्ष	मक	23:04:08	चन्द्र 09/10/2036
चन्द्र 24/09/2038	14:30:53	मक व	नेप	मक	10:02:37	मंगल 15/09/2037
मंगल 13/10/2039	19:39:37	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	17:45:50	राहु 09/02/2040

लग्न-चलित

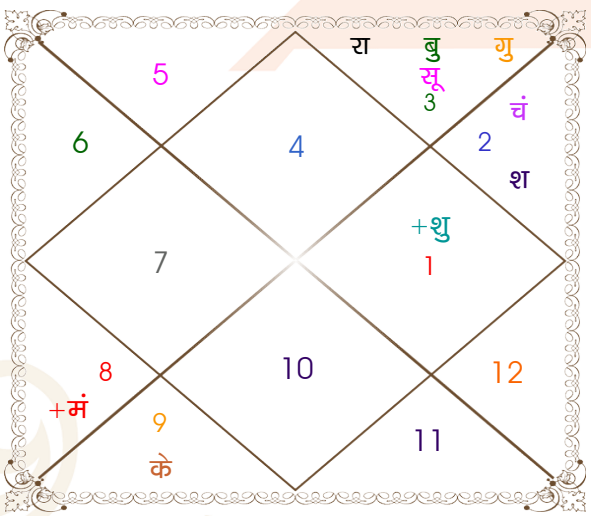

लग्न-चलित

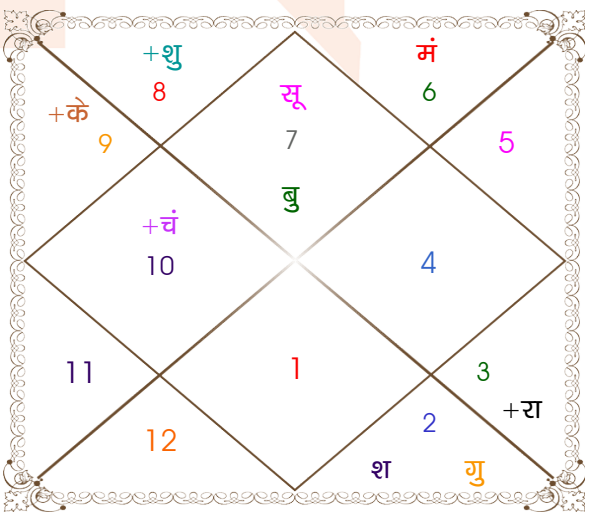

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	सिंह	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	मकर	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

न्जांती अंपीदंअ का वर्ग गरूड़ है तथा ँािप का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार न्जांती अंपीदंअ और ँािप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

न्जांती अंपीदंअ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

ँािप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ँािप कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु न्जांती अंपीदंअ कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि न्जांती अंपीदंअ कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

न्जांती अंपीदंअ तथा ैाीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।